बरेली, सोमवार
3 अगस्त, 2026
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 7.00
RNI 14+4=18

दैनिक जागरण

PAGE NO : III BOTTOM

रिश्तों और मानवीय संवेदनाओं को दें अहमियत

बरेली: एसआरएमएस रिद्धिमा में रविवार को मणिमधुकर लिखित हास्य व्यंग्य नाटक 'दुलारी बाई' का मंचन हुआ। इस नाटक ने धन-लोलुपता, स्वार्थ और सामाजिक विडंबनाओं पर गहरी चोट की। केंद्रीय पात्र दुलारी बाई अपने कंजूस स्वभाव के कारण अनेक हास्यास्पद परिस्थितियों में उलझती है, जो दर्शकों को मनोरंजन के साथ मानवीय मूल्यों के क्षरण पर सोचने के लिए प्रेरित करती है।

नाटक की शुरुआत कल्लू भांड और दुलारी बाई के चुटीले संवाद से होती है। एक दिन गांव का एक शख्स कटोरीमल इत्र का सौदागर बनकर दुलारी बाई से मदद मांगता है। वहीं, नानकु मोची भी दुलारी बाई को छेड़ता है। एक साधु बनकर कल्लू भांड दुलारी बाई को दलिया बनाने के लिए मजबूर करता है। अंततः, दुलारी बाई की शादी एक राजा से होती है, जो वास्तव में कल्लू भांड होता है। नाटक का समापन दुलारी बाई के भगवान से वरदान मांगने के साथ होता है, जिससे सब कुछ सोने का हो जाता है। निर्देशन विनायक कुमार श्रीवास्तव ने किया। दुलारी बाई की भूमिका विषा गंगवार और कल्लू भांड की भूमिका सूर्य प्रकाश ने निभाई। कटोरीमल का किरदार नाटक के निर्देशक विनायक कुमार श्रीवास्तव ने खुद निभाया। हिरदयांश उपाध्याय (ननकु मोची), राज किशोर पाठक (पटेल), निशांत कुमार (फर्जी लाल), हर्ष यादव (गंगा राम), प्रथम शर्मा (ईश्वर) ने भी अपने पात्रों को जीवंत किया। इस दौरान ट्रस्ट के संस्थापक देव मूर्ति, आदित्य मूर्ति, आशा मूर्ति, ऋचा मूर्ति, देविशा मूर्ति, उषा गुप्ता, सुभाष मेहरा, डा. एमएस बुटोला, डा. प्रभाकर गुप्ता, डा. अनुज कुमार आदि मौजूद रहे। (वि.)

रिद्धिमा में नाटक का मंचन करते कलाकार • सौ. आयोजक